डायस्पोरा अध्ययन विभाग होगा हिंदी को ग्लोबल बनाने का माध्यम-कुलपति राय

वर्धा दि. 19 अक्तूबर 2010- आज देश और दूनिया में मार्केट का बोलबाला है। हिंदी भाषा बढते हुए मार्केट को काबीज करने का एक जरिया बना है और मार्केट की भाषा हिंदी बन रही है । इसे देखते हुए विश्वविद्यालय में स्थापित डायस्पोरा अध्ययन विभाग हिंदी को ग्लोबल बनाने का एक प्रभावकारी माध्यम साबित होगा। भारत के बढते हुए मार्केट की वजह से विदेश के छात्र आते है वैसे ही मार्केट की भाषा के रूप में हिंदी सीखने के लिए विवि में विदेश के छात्र आ सकेंगे। उक्त मत महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने व्यक्त किये। वे डायस्पोरा अध्ययन विभाग की ओर से त्रि-दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर बोल रहे थे।

विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ में दि. 18 से 20 तक डायस्पोरा अध्ययन विभाग की ओर से एम. फिल पाठ्यक्रम निर्धारित करने हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारतीय मूल के आस्ट्रेलिया के नागरिक थामस मैथ्यू, मॉरिशस स्थित महात्मा गांधी संस्थान की डॉ. रेशमी रामधोनी, त्रिकान इमेज सिस्टम के संस्थापक तथा भारतीय डायस्पोरा पर 'जहाजी भाई, पुरानो मानुश' आदि डाक्युमेंट्री के निर्माता सुरेश पिल्लई, जी.बी. पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद के डॉ. बद्रीनारायण तिवारी, गुजरात विश्वविद्यालय, गांधीनगर में डायस्पोरा अध्ययन विभाग की समन्वयक डॉ. नीरजा अरूण, विवि के मानवविज्ञान विभाग के अध्यक्ष प्रो. टी.के. वैष्णव, डायस्पोरा अध्ययन विभाग के एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. राजीव रंजन राय, जनसंचार विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल के. राय अंकित, नाटय एवं फिल्म अध्ययन विभाग के प्रो. रवि चतुर्वेदी, अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के एसिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी प्रमुखता से उपस्थित थे।

कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. राजीव रंजन राय ने उपस्थितों का स्वागत किया। उद्घाटन के बाद आस्ट्रेलिया में भारतीय डायस्पोरा विषय पर ई-लिप के थामस मैथ्यू ने पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से पाठ्यक्रम को तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की । सुरेश पिल्लई ने डायस्पोरा संसाधन के विकास की रूपरेखा पर चर्चा की और कहा कि भारतीय डायस्पोरा शोध के लिए प्रमुख और अहम भूमिका निभाएगा। द्वितीय सत्र में डायस्पोरा अध्ययन विभाग के उद्देश्यो का निर्धारण, मासिक, छमाही एवं वार्षिक सेमिनारों के आयोजन की रूपरेखा एवं उसकी विषय वस्तु आदि पर चर्चा की। इसी सत्र में भारतीय डायस्पोरा पर फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इस दौरान डॉ. रेशमी रामधोनी ने कहा कि विदेशों में बसे भारतीयों के लिए डायस्पोरा अध्ययन यहां की संस्कृति से जुडे रहने के लिए संबल प्रदान करेगा। उन्होंने आशा जताई कि यह विश्वविद्यालय सचमुच में अंतरराष्ट्रीय स्वरूप में भारतीय अस्मिता को विस्तारित करने में अहम भूमिका निभाएगा।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी